Swar Sindhu: National Peer-Reviewed/Refereed Journal of Music
A UGC CARE listed Journal
ISSN 2320–7175 | Volume 11, Issue 01, January-June, 2023
http://swarsindhu.pratibha-spandan.org © The Author(s) 2023

गायकी अंग और उस्ताद विलायत खाँ

PRADEEP KUMAR[1] & DR. GAGANDEEP HOTHI[2]

[1]Assistant Professor, Dept. of Music, Dance and Performing Arts, Uttarakhand Open University, Haldwani, Nainital
[2]Assistant Professor, Department of Music, D.S.B Campus, Kumaun University, Nainital

सारांश

सितार वाद्य यंत्र प्राचीन समय से तंत्रकारी अंग का वाद्य यंत्र रहा है जिसमें अधिकतर तबले के जोरदार बोलों का प्रयोग किया जाता था। समय-समय पर इस वाद्य तथा उसकी वादन शैली में अनेकों परिवर्तन हुए। अनेक कलाकारों द्वारा सितार पर अपनी खुद की वादन शैली को विकसित किया गया। इसमें उस्ताद मसीत खाँ साहब, उस्ताद रजा खाँ साहब, उस्ताद अब्दुल हलीम जाफर खाँ साहब, उस्ताद फिरोज खाँ साहब, उस्ताद अल्लाउद्दीन खाँ साहब इत्यादि का नाम विशेष रूप से उल्लेखनीय हैं। उस्ताद विलायत खाँ साहब द्वारा भी ख्याल गायन शैली पर अधारित एक नवीन शैली (ख्याल अंग) का निर्माण किया गया। उस्ताद विलायत खाँ साहब के जीवन संर्घष, संगीत में गायन के प्रति लगाव, पिता का देहान्त हो जाना तथा उस समय के गायकों का प्रभाव जो उनके व्यक्तित्व पर पड़ा। परिणाम यह रहा कि उनके द्वारा सितार वाद्य पर "गायकी अंग" को विकसित किया गया।[1(पृ0-92)] "गायकी अंग" को सितार पर सफल बनाने में उनके द्वारा किए गए प्रयास व प्रयोगों पर इस लेख में प्रकाश डालने का प्रयास किया गया है।

मुख्य शब्द- गायकी अंग, सितार, तंत्रकारी अंग, विलायतखानी बाज, ख्याल अंग

भूमिका

उस्ताद विलायत खाँ साहब का जन्म 28 अगस्त 1928 को पूर्वी बंगाल के गौरीपुर में हुआ।[2,5,7,12(पृ0-188)] आपके पिता का नाम उस्ताद इनायत खाँ साहब माता का नाम बसीरन बेगम था। आपके पिता उस्ताद इनायत खाँ साहब भी अपने समय में "सितार" और "सुरबहार" के ऊच्चकोटि के कलाकार रहे।[1,5,7] आपके दादा का नाम उस्ताद इमदाद खाँ साहब था।[1,5] यह बात विशेष रूप से उल्लेखनीय हैं कि सितार पर इमदादखानी घराने के विभिन्न कलाकारों द्वारा समय-समय पर अनेकों प्रयोग किये गये।

पिता की मृत्यु के समय उस्ताद विलायत खाँ साहब की आयु 11 वर्ष की रही होगी।[2] प्रारम्भिक शिक्षा अपने पिता से प्राप्त करने के बाद आपने अपने नाना उस्ताद बन्दे हसन खाँ साहब व मामा उस्ताद जिन्दे हसन खाँ साहब से गायन की तालीम प्राप्त की और सुरबहार की शिक्षा अपने चाचा उ0 वहीद खाँ साहब से प्राप्त की।[5,7,12(पृ0-188)]

आगरा घराने के उ0 फैयाज खाँ साहब से भी "ख्याल" सीखा। उस्ताद अमीर खाँ साहब, उस्ताद बड़े गुलाम खाँ साहब इत्यादि अनेक उच्च कोटि के कलाकारों का प्रभाव भी उस्ताद विलायत खाँ साहब के संगीत पर रहा।[12(पृ0-188)]

आरम्भ में उस्ताद विलायत खाँ साहब का झुकाव गायन के प्रति ज्यादा रहा। माता जी की प्रेरणा से उन्होंने अपने पारम्परिक साज "सितार" को अपनाया।[5,11, 12(पृ0-188)] उस्ताद विलायत खाँ साहब का गायकी के प्रति जो लगाव रहा उसी का यह फल रहा कि आपके द्वारा गायन शैली पर अधारित "गायकी अंग" को विकसित किया गया।[5,11, 12(पृ0-188)] "गायकी अंग" को सितार वाद्य यंत्र पर बजाना बहुत ही मुश्किल कार्य था। आपके द्वारा श्री हिरन रॉय, श्री रिखी राम, "श्री कन्हई लाल (उस समय के सुप्रसिद्ध उच्च कोटि के सितार वाद्य का निर्माण करने वाले कारीगर) के साथ मिलकर सितार वाद्य यंत्र में अनेकों एतिहासिक परिवर्तन किये गए"[10] जिसके बाद आपको सितार वाद्य यंत्र में "गायकी अंग" बजाने में और अधिक सहायता मिली।

"गायन शैली" को सितार वाद्य यंत्र पर बजाने के लिए जो एतिहासिक परिवर्तन उस्ताद विलायत खाँ साहब द्वारा अपने सम्पूर्ण जीवन काल में किए गए उन पर मेरे द्वारा इस लेख में प्रकाश डालने का प्रयास किया गया है।

Swar Sindhu: National Peer-Reviewed/Refereed Journal of Music
A UGC CARE listed Journal
ISSN 2320–7175 | Volume 11, Issue 01, January-June, 2023
http://swarsindhu.pratibha-spandan.org © The Author(s) 2023

नवीन शैली का निर्माण

उस्ताद विलायत खाँ साहब के सितार वादन में तंत्रकारी कौशल के साथ-साथ गायकी अंग की झलक स्पष्ट रूप से सुनाई पड़ती हैं।[5,12(पृ0-188)] सितार पर ख्याल गायकी को विकसित करने का श्रेय उस्ताद विलायत खाँ साहब को ही जाता है। उस्ताद विलायत खाँ के पिता की मृत्यु के पश्चात् उन्होंने अपनें मामा उस्ताद जिन्दे हसन खाँ साहब और नाना बन्दे हसन खाँ साहब से गायन सीखा तथा चाचा उस्ताद वहीद खाँ साहब से सुरबहार सीखा उस समय के कई विद्वान कलाकार जिसमें उस्ताद फैयाज खाँ साहब, उस्ताद अमीर खाँ साहब, उस्ताद बड़े गुलाम अली खाँ साहब आदि उस्ताद विलायत खाँ सहाब के प्रेरणा स्त्रोत रहे।[5,12(पृ0-188)]

बचपन से ही उस्ताद विलायत खाँ साहब का झुकाव गायन के तरफ रहा। गायन के प्रति खाँ साहब की रूचि देखकर उनकी माता जी को ये आभास हुआ की उस्ताद विलायत खाँ की अपने पारम्परिक वाद्य (सितार) के प्रति रूचि कम है। ये देखकर उनकी माता जी ने उस्ताद विलायत खाँ साहब को अपने पारम्परिक वाद्य (सितार) को चुनने के लिए प्रेरित किया। माता जी के आदेश का पालन करते हुए उस्ताद विलायत खाँ साहब ने सितार वाद्य पर अपना ध्यान केंद्रित किया।[5,11, 12(पृ0-188)]

उस्ताद विलायत खाँ साहब के अनुसार- "वह अपने पिता की अकास्मिक मृत्यु के कारण उनसे सीख नहीं पाये जिस कारण उन्हें गुरू की तलाश में अनेकों उस्तादों के पास जाना पड़ा। अलग-अलग उस्तादों से संगीत की "तालीम" लेनी पड़ी। एक साक्षात्कार में अपनी सरलता का परिचय देते हुए उन्होनें यह भी कहा है कि मैं कभी अपने पिता व दादा की तरह सितार बजा न पाया इसलिए मुझे सितार पर कई प्रयोग करने पड़े जिसके फलस्वरूप सितार पर एक नवीन शैली (गायकी अंग) विकसित हुई।"[4,11]

सितार पर गायन

उस्ताद विलायत खाँ साहब जब सितार पर कोई राग बजाते थे, तब वह ध्यान की अवस्था में चिंतन करते रहते थे जिससे गायन उनके हृदय में उभर आता था। उस्ताद विलायत खाँ साहब जब सितार बजाते थे, तब गायकी से प्रभावित होने के कारण उनका का हृदय उन्हें गाने के लिए भी प्रेरित करता था। ठुमरी वादन करते समय या बंदिश का वादन करते समय तो आप पहले ठुमरी/बंदिश गाते फिर उसी को सितार पर बजाते। उस्ताद विलायत खाँ साहब कहते थे कि "नाना उस्ताद बन्दे हसन खाँ साहब व मामा उस्ताद जिन्दे हसन खाँ साहब उनको तालीम देते समय कई ख्यालों का गायन कराते थे इस प्रकार मेरे हृदय में गायन की आत्मा स्वयं ही बस गई।" कुछ समय के बाद उस्ताद विलायत खाँ साहब सितार के माध्यम से ही गाने लगे।

'सितार एक ऐसा वाद्य यंत्र है, जिस पर गायकी बजाना बहुत ही मुश्किल कार्य हैं क्योंकि सितार पर स्वर की निरन्तरता नहीं रहती, अर्थात सितार की तार पर मिज़राब से आघात करने के उपरांत आवाज की निरन्तरता ज्यादा लम्बे समय तक नहीं बनी रहती है। इसी समस्या के निवारण हेतु सितार पर आँस को बढ़ाने के लिए उस्ताद विलायत खाँ साहब द्वारा मींड का प्रयोग किया गया।'[10] मींड के साथ-साथ ख्याल गायकी में प्रयुक्त खटका, गमक, मुर्की, जमजमा, कृतन आदि को भी सितार पर बजाना शुरु किया।[10] लेकिन सितार वाद्य यंत्र पर यह कार्य करना काफी कठिन था। उस्ताद विलायत खाँ साहब को सितार वाद्य यंत्र पर कई परिवर्तन करने पड़े जिसके कारण उस्ताद विलायत खाँ साहब ने सितार वाद्य यंत्र पर समय-समय अनेकों प्रयोग किए जिससे कि वह अपने मस्तिष्क में उत्पन्न सांगीतिक कल्पना को सितार वाद्य यंत्र पर बजा पाने में सफल रहे।

विलायतखानी बाज

उस्ताद विलायत खाँ साहब ने अपने वादन शैली के अनुरुप सितार वाद्य यंत्र में कई एतिहासिक परिवर्तन किये। सितार पर गायकी बजाने के लिए उन्होने श्री रिखी राम, श्री कन्हई लाल और श्री हिरन रॉय, के साथ मिलकर सितार को एक नया रुप प्रदान किया। जिसके पश्चात् सितार वाद्य यंत्र का ढाँचा, तबली, तूम्बा, डॉड, तार, मींड, तार गहनी, जवारी, आदि में कई परिवर्तन हुए। तब जाकर विलायतखानी बाज की नींव रखी गई।[4,10]

Swar Sindhu: National Peer-Reviewed/Refereed Journal of Music
A UGC CARE listed Journal
ISSN 2320–7175 | Volume 11, Issue 01, January-June, 2023
http://swarsindhu.pratibha-spandan.org © The Author(s) 2023

सितार वाद्य यंत्र में परिवर्तन

श्री अजय शर्मा जी (Rikhi Ram and Son's) सुप्रसिद्ध सितार निर्माता के अनुसार-[4]

- **तूम्बे में परिवर्तन**- उस्ताद विलायत खाँ साहब द्वारा तूम्बे के आकार में परिवर्तन कर उसके आकार को कम करके तूम्बे को गोलाकार बनाया गया। जिसके कारण वाद्य की ध्वनि में गूँज पैदा हुई।[4]
- **तबली में परिवर्तन**- उस्ताद विलायत खाँ साहब द्वारा तबली की मोटाई को बढ़ाकर सितार की तबली में भी परिवर्तन किया गया जिससे मोटे तार को ताकत प्रदान हुई।[4] पहले दो स्वरों की मींड का प्रयोग किया जाता था, फिर उस्ताद विलायत खाँ साहब द्वारा पाँच स्वरों की मींड का प्रयोग किया गया। मीड़ का प्रयोग करते समय स्वरों को टिकाने व मींड में गूंज पैदा करने के लिए तबली की मोटाई को बढ़ाया गया।[1,10]
- **पर्दों के आकार में परिवर्तन**- पुराने सितारों में पर्दों का आकार अपेक्षाकृत सपाट होता था क्योंकि मींड का इतना अधिक प्रयोग नहीं था। उस्ताद विलायत खाँ साहब द्वारा सितार पर पाँच स्वरों की मींड को सक्षम बनाने के लिए पर्दों का आकार वर्क किया गया।[1,4,11]
- **बैकेलाइट/आबनूस की जवारी-** उस्ताद विलायत खाँ साहब कि कल्पना में जो ध्वनि थी, उसे प्राप्त करने के लिए अपनी सितार में उन्होंने ब्लैक (बैकेलाइट/आबनूस) जवारी का प्रयोग किया गया।[4]
- **छोटा छिद्र**- उस्ताद विलायत खाँ साहब द्वारा सितार वाद्य यंत्र पर कई प्रयोग किए गये। एक प्रयोग में उन्होने ब्रिज (जवारी) के नीचे एक छोटा-सा-छेद किया, जिससे सितार की ध्वनि में वृद्धि हुई और एक बेहतर Acoustic ध्वनि प्राप्त हुई।[4]
- **जवारी पर दो स्तम्भ/पाँव**- जवारी को ऊँचाई प्रदान करने के लिए जवारी पर दो स्तम्भ/पाँव लगाये गये जिससे मुख्य तार (बाज़ का तार) पर वादन करते समय तार के पर्दों पर टकराने की समस्या का समाधान हुआ।[4]
- **"मनके" का प्रयोग**- सितार वाद्य यंत्र की तारों को किसी एक विशेष स्वर में मिलते समय जब स्वर बेसुरा(उतर या चढ़ जाये) हो जाता है। उस स्थिति में तार पर स्वर को स्थिर रखने के लिए और तार पर स्वर के बारीक उतार या चढ़ाव को मिलाने के लिए उस्ताद विलायत खाँ साहब द्वारा सितार वाद्य यंत्र पर "मनके" का प्रयोग किया गया।[4]
- **बाज का तार**- उस्ताद विलायत खाँ साहब ने सितार वाद्य यंत्र मुख्य तार (बाज का तार) 3 नम्बर मोटाई का इस्तेमाल किया। 3 नम्बर मोटाई का मुख्य तार (बाज का तार) खींचने में अपेक्षाकृत कठिन और सख्त होता है परंतु इससे वह अपने मुख्य तार (बाज का तार) पर ध्वनि की गंभीरता को प्राप्त कर सके।[4]
- **जोड़े का तार**- पहले सितार पर दो जोड़े के तारों का प्रयोग किया जाता था। उस्ताद विलायत खाँ साहब ने एक जोड़े का तार हटा दिया[1,3,4,5] इसके मुख्यतः दो कारण रहे:-
    - **पहला कारण**- सितार वादन करते समय वादन काफी जोरदार हो जाता है। सितार वादन के समय जब दो जोड़े के तारों को एक स्वर में मिलाकर रखा जाता था तब जोरदार वादन के कारण एक जोड़े का तार बिखर जाता था इसलिए उस्ताद विलायत खाँ साहब ने एक जोड़े का तार हटा दिया और सितार पर तारों की संख्या 7 से घटकर 6 रह गई।[1]

Swar Sindhu: National Peer-Reviewed/Refereed Journal of Music
A UGC CARE listed Journal
ISSN 2320–7175 | Volume 11, Issue 01, January-June, 2023
http://swarsindhu.pratibha-spandan.org © The Author(s) 2023

- **दूसरा कारण**- पंडित रविशंकर जी द्वारा सितार पर एक अतिरिक्त "जोड़े के तार" (अति मंद्र) का प्रयोग अतिमंद्र सप्तक में "सितार वादन" करने के लिए किया गया। उस्ताद विलायत खाँ साहब द्वारा अति मन्द्र सप्तक का काम सुरबहार पर किया जाता था।[3]

- **अन्य सभी तारें**- उस्ताद विलायत खाँ साहब द्वारा सभी तारों के लिए अलग-अलग नम्बर की तारों का प्रयोग किया गया। जिससे सितार पर एक सही गुणवत्ता वाली ध्वनि प्राप्त हुई।[4]
- **गांधार-पँचम का तार**- उस समय तक सितार पर ब्रास पँचम का तार प्रयोग किया जाता था। इस तार को हटाकर स्टील का तार लगाया गया[5] उसके बाद एक तार और लगाया गया जिसे गांधार का तार कहा गया। इन तारों को आगे चलकर सितार पर गांधार-पँचम की तार कहा गया। गांधार-पँचम की तारों को रागानुसार वादी-सम्वादी या स्वर भाव के अनुसार मिलाया जाने लगा।[4]
- **तरब की तार**- उस्ताद विलायत खाँ साहब ने तरब की तारों को लगभग समानान्तर रखा। जो पर्दों के नीचे से एक छोटी ब्रिज (जवारी) होकर गुजरती हैं। इस कारण स्वरों में आँस बढ़ गई।[4]
- **चिकारी व तरब की तार**- उस्ताद विलायत खाँ साहब ने चिकारी और तरब की तारों के लिए एक नम्बर की तार का प्रयोग किया जिससे एक बेहतर प्रतिध्वनि उत्पन्न हुई।[4]
- **चिकारी की खूटियाँ**- उस्ताद विलायत खाँ साहब ने सितार वाद्य को शक्ति प्रदान करने के लिए और तार पर अधिक तनाव उत्पन्न करने के लिए खूटियों की ऊँचाई को कम किया।[4]

निष्कर्ष

4 मार्च 2004 को उस्ताद विलायत खाँ साहब का निधन हो गया।[12(पृ0-189)] उस्ताद विलायत खाँ साहब अपने सम्पूर्ण जीवन काल के दौरान संगीत की गुणवत्ता को समृद्ध करने हेतु निरंतर प्रयत्नशील रहे। इसी के परिणामस्वरूप उनके सितार पर गले की बारीकियों का आभास किया जा सकता है। उस्ताद विलायत खाँ साहब की वादन शैली और उनके द्वारा सितार वाद्य यंत्र पर किये गये प्रयोगों का प्रभाव यह रहा कि वर्तमान में सितार वाद्य यंत्र पर "गायकी" जैसी मुश्किल शैली को बजाने की परम्परा आरम्भ हुई। इसका परिणाम यह भी रहा कि अन्य घरानों के कलाकार भी उस्ताद विलायत खाँ साहब के सांगीतिक प्रभाव से खुद को बचा न सके। इन्हीं प्रभावों के कारण उस्ताद विलायत खाँ साहब व उनके बाज़ की छाप निरंतर कलाकारों की वादन शैली में नजर आती रहेगी।

सन्दर्भ ग्रन्थ

1. हिन्दुस्तानी संगीत में तंत्र वादकों का योगदान, श्रीमती शर्मा वीना, प्रथम संस्करण-2008, कनिष्क पब्लिशर्स, डिस्ट्रीब्यूटर्स, 4697/5-21 ए. अंसारी रोड, दरियागंज, नई दिल्ली- 110 002, पृ0-92,93
2. सितार वादन की शैलियाँ, श्रीमती भटनागर रजनी, प्रथम संस्करण-2006, कनिष्क पब्लिशर्स, डिस्टीब्यूटर्स नई दिल्ली-110 002, पृ0-184
3. भार्गव, अंजना: "भारतीय संगीत शास्त्रों में वाद्यों का चिंतन", प्रथम संस्करण-2002, द्वितीय संस्करण-2009, कनिष्क पब्लिशर्स, डिस्ट्रीब्यूटर्स ,4697/5-21 ए. अंसारी रोड, दरियागंज, नई दिल्ली- 110 002, पृ0-213
4. khan, z. (2016, may 04). Documentary of Ustad Vilayat Khan By Zila Khan - Spirit to Soul. Retrieved from youtube: https://www.youtube.com/watch?v=DWMn3484tQY

5. विलायत ख़ाँ. (201, 10 15). Retrieved from भारतकोष: https://m.bharatdiscovery.org/india/%E0%A4%B5%E0%A4%BF%E0%A4%B2%E0%A4%BE%E0%A4%AF%E0%A4%A4_%E0%A4%96%E0%A4%BC%E0%A4%BE%E0%A4%81
6. Interview: Ustad Vilayat Khan | Courtesy: Tara TV | From Archive of Ramprapanna Bhattacharya. (2019, may 02). Retrieved from youtube: https://www.youtube.com/watch?v=wCziVPV7r0s
7. Raaggiri. (2019, june 16). Untold Story of Ustad Vilayat Khan Sitar Player. Retrieved from youtube: https://www.youtube.com/watch?v=j3AKh4ETtRs
8. navrasrecords. (2022, August 27). Interview with Ustad Vilayat Khan Saheb Nov 1993 with Sarita Sabharwal TV Asia. Retrieved from youtube: https://www.youtube.com/watch?v=3ZPEysHpMHE
9. Guild, M. (2021, August 06). VILAYAT KHAN A PRIVATE INTERVIEW. Retrieved from youtube: https://www.youtube.com/watch?v=A22XxsmD5eM
10. soulesprit. (2011, May 03). Bharat Sitar Samrat Ustad Vilayat Khan. Retrieved from youtube: https://www.youtube.com/watch?v=Z8wncWmM50w
11. Chaurasia, V. G. (2016, February 26). Ustad Vilayat Khan. Retrieved from youtube: https://www.youtube.com/watch?v=qc_x9yiby_c
12. संगीत सागरिका, बंसल परमानंद, चन्द ज्ञान, प्रथम संस्करण-2009, प्रासंगिक पब्लिशर्स एंड डिस्ट्रीब्यूटर्स, बि-3/372, सेक्टर-6, रोहिणी, नई दिल्ली- 110085, पृ0-188,189